मिथिलाक शैक्षणिक परम्परा

'शिक्षा' शब्द संस्कृतक 'शिक्ष्' धातुसँ व्युत्पन्न भेल अछि जकर सामान्य अर्थ अछि– सिखब ओ सिखायब । एहि दृष्टिएँ कहल जा सकैछ जे शिक्षामे सिखब-सिखयबाक प्रक्रिया चलैत रहैत अछि ।

शिक्षाक अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'एजूकेशन' अछि जे लैटिन भाषाक 'एजूकेयर' शब्दसँ निकलल मानल जाइछ जकर अर्थ थिक विकसित करब, बढ़ायब, उठायब आदि । एहि दृष्टिएँ सेहो शिक्षा एक प्रक्रियाक रूपमे सोझाँ अबैत अछि जकर द्वारा मनुक्खक व्यक्तित्वक विकास होइत अछि । नेनाक जन्महिसँ ई प्रक्रिया शुरू भऽ जाइछ तथा जीवन भरि अविकल रूपसँ चलैत रहैत अछि । जन्मसँ मृत्युपर्यन्त धरि हम अनेक वस्तु, संस्था एवं विचारक सम्पर्कमे अबैत छी, प्रतिक्षण नवीन अनुभव प्राप्त करैत छी । एहि अनुभव एवं संस्कारसँ हमर ज्ञानक परिधि तँ व्यापक होइतहि अछि हमर व्यवहार-विचारमे सेहो परिवर्तन होइत अछि । एहि प्रकारेँ कहल जा सकैछ शिक्षा एहन प्रक्रिया थिक जे व्यवस्थित रूपसँ कोनहु शिक्षा-संस्थामे वा शिक्षक, गुरु आदिसँ ज्ञान किंवा विद्याक प्राप्तिक संग-संग चारित्रिक तथा मानसिक शक्तिक विकास धरि चलैत रहैत अछि ।

'शैक्षणिक' शब्दक अर्थ अछि शिक्षा-संबंधी । मिथिलाक शैक्षणिक परम्पराक इतिहास प्राचीन कालहिसँ गौरवपूर्ण रहल अछि । अति प्राचीन कालमे (वैदिक-युगसँ पूर्व) मिथिलामे औपचारिक शैक्षिक-संस्थान नहि छल । घरमे पिता वा पितामह नेना सभकेँ शिक्षा दैत छलथिन । धीरे-धीरे ज्ञान-विज्ञानक प्रगतिक कारणेँ परिवारक बीच शिक्षा-व्यवस्था कठिन होमय लागल तेँ समाज द्वारा प्रख्यात विद्वान्-लोकनिकेँ नियमित शिक्षा देबाक हेतु प्रोत्साहित कयल

गेल । एवं प्रकारेँ समाजक ज्ञानी लोकनि शिक्षण-कार्य प्रारम्भ कयलनि । हुनका लोकनिकेँ गुरु आओर आचार्यक पदवी देल गेल ।

ऋग्वैदिक युगक उत्तर कालमे एहि आचार्य लोकनिक आश्रमकेँ गुरुकुल कहल गेल । गुरुकुले ओहि समयक एकमात्र शैक्षिक संस्था छल जतय छात्र सुनियोजित आओर सुव्यवस्थित शिक्षाक प्राप्ति करैत छल ।

उपनिषद-कालमे मिथिलामे शिक्षा-प्राप्तिक तीन साधन छल–

1. गुरुकुल –जाहिठाम उपनयन संस्कारक पश्चात् 12 वर्ष धरि छात्र-लोकनि गुरुक आश्रममे रहिकेँ शिक्षा ग्रहण करैत छलाह ।

2. शैक्षिक वाद–विवाद परिषद् दोसर प्रकारक शिक्षण-संस्था छल । एहि परिषदमे शिक्षाक गूढ़ विषय पर विद्वान् लोकनिक बीच वाद-विवाद होइत छल ।

3. सभा– एहिमे भिन्न-भिन्न जनपदक विद्वान् लोकनि उपस्थित होइत छलाह आओर सत्य, आत्मा, ज्ञान, मोक्ष आदि दार्शनिक विषय पर शास्त्रार्थ होइत छल । शास्त्रार्थमे विजेता विद्वान्केँ राजा द्वारा पुरस्कृत कयल जाइत छल ।

मिथिलाक राजा जनक आओर ऋषि याज्ञवल्क्यक ज्ञान-विज्ञानक प्रकाशसँ सम्पूर्ण आर्यावर्त आलोकित छल । विश्वक प्रथम दार्शनिक सम्मेलन मिथिलाक राजा जनकक दरबारमे भेल छल । ओहि सम्मेलनमे ऋषि याज्ञवल्क्य शास्त्रार्थमे विदेशागत विद्वान् सभकेँ पराजित कऽ राजा द्वारा पुरस्कृत भेलाह आओर जनक-राजवंशक कुल-गुरु घोषित भेलाह ।

उपनिषद कालमे मिथिला शिक्षा एवं संस्कृतिक केन्द्र छल । ओहि समयमे वैदिक साहित्यक सङ्ग, षड् दर्शनक विकास चरमोत्कर्ष पर छल । छओ दर्शनमे चारि दर्शन न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आओर सांख्य दर्शनक जन्म गौतम, कणाद,

जैमिनी आओर कपिल मुनि द्वारा मिथिलामे 1000 ईसापूर्व सँ 600 ईसापूर्वक बीच भेल छल ।

यूनानी राजदूत मेगास्थनीज 300 ईसापूर्वमे भारत आयल छलाह । ओ मिथिलाक शैक्षिक-परम्परा आओर दर्शनक भूरि-भूरि प्रशंसा कयने छथि ।

मिथिलामे गौतमक पश्चात् प्रमुख नैयायिक वात्स्यायन एवं उद्योतकर भेलाह । 8म शताब्दीसँ पहिनहि मिथिलाक दक्षिण भागमे बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार भऽ चुकल छल । पं. वाचस्पति मिश्र एवं उदयनाचार्य अपन कुशाग्र बुद्धिक बलेँ बौद्ध-लोकनिक सनातन-विरोधी एवं आक्रामक तर्ककेँ खंडित कऽ प्राचीन न्याय-दर्शनक सिद्धान्तकेँ स्थापित कयलनि । वैशालीमे बौद्ध-धर्मावलम्बीक गढ़केँ खंडित कऽ सनातन धर्मकेँ पुनर्स्थापित करबामे मिथिलाक सपूत कुमारिल भट्टक विशिष्ट शैक्षिक योगदान रहल अछि ।

एकर पश्चात् मिथिलाक प्रमुख मीमांसक मंडनमिश्रक नाम अबैत अछि जिनका संग शंकराचार्यक शास्त्रार्थ चर्चित अछि ।

कर्णाट एवं ओइनवार वंशक शासनावधिमे संस्कृत एवं पारम्परिक शिक्षाकेँ पूर्ण प्रश्रय भेटलैक तथा सकारात्मक प्रगति प्राप्त कयलक । एहि कालमे स्मृतिक अध्ययन पर बेस ध्यान देल गेल । एहि कार्यमे चण्डेश्वर, श्रीदत्तोपाध्याय, इन्द्रपति, लक्ष्मीपति आदि विद्वान्क महत्त्वपूर्ण योगदानक उल्लेख इतिहासकार लोकनि कयलनि अछि । ओइनवारक शासनकालमे मिथिलामे मीमांसाक अध्ययनमे अपूर्व प्रगति भेलैक । पद्मसिंहक पटरानी विद्वत्सभा आयोजित कऽ चौदह सय मीमांसककेँ आमंत्रित कयने छलीह । मिथिलाक मीमांसकमे भट्ट आ प्रभाकर दूटा सम्प्रदायक प्रचलनक सूचना भेटैत अछि जाहिमे प्रभाकर मिश्रक शाखा बेसी ख्यात छल । मिथिलामे गंगेश, वर्धमान, पक्षधर तथा अन्य विद्वान् लोकनिक अवदानक कारणेँ नव्यन्याय नामक एक विशिष्ट शैक्षिक परम्परा विकसित भेल जे आनो प्रदेशक शिक्षार्थी लोकनिकेँ विद्या-प्राप्तिक लेल आकर्षित करैत रहल ।

एहि अवधिमे मिथिलामे ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, गोविन्द दास आओर उमापति सदृश विद्वान लोकनिक आविर्भाव भेल । ई लोकनि संस्कृतक संग-संग मैथिली भाषामे स्वतंत्र आओर उत्कृष्ट ग्रन्थ सभक रचना कयलनि ।

नव्य न्याय पद्धतिक जन्मदाता गंगेश उपाध्याय (1093-1150) क आविर्भाव मङरौनी गाममे भेल । हिनक रचना "तत्त्व चिन्तामणि" पश्चात्वर्ती विद्वान् लोकनिकेँ कतेको शताब्दी धरि प्रभावित करैत रहल ।

नालन्दा आओर विक्रमशिला विश्वविद्यालयक ध्वस्त भेलाक बाद मिथिला शिक्षाक प्रमुख केन्द्र भऽ गेल । एहि ठामक शिक्षण-व्यवस्था सम्पूर्ण देशमे चर्चित छल । मिथिलाक विश्वविद्यालयमे स्नातक आओर शिक्षा समाप्तिक लेल विशिष्ट परीक्षाक आयोजन होइत छल जकरा 'श्लाका' परीक्षा कहल जाइत छल । एहि परीक्षामे छात्रक प्रतिभाक परीक्षण सम्यक् रूपसँ होइत छल ।

मिथिला विद्यापीठक आचार्य लोकनिक उपाधि जेना- उपाध्याय, महोपाध्याय, महामहोपाध्याय क्रमशः हुनकर विद्वत्ता, प्रवीणता एवं वरीयताक आधार पर देल जाइत छल ।

मिथिलामे 'पद्मनाभदत्त' द्वारा एकटा विशिष्ट संस्था 'व्याकरण-विद्यालय'क स्थापना कयल गेल जाहिमे साहित्य, विज्ञान, तर्कशास्त्र, मीमांसा, ज्योतिष, स्मृति आओर धर्मशास्त्रक अध्ययन-अध्यापन होइत छल ।

मिथिलामे अनेको गामक नामकरण ओहिठाम प्रचलित वेद-वेदांग एवं शास्त्रक विशिष्ट अध्ययन-अध्यापनक आधार पर भेल अछि । 'रीगा', 'यजुआर', 'अथरी' आ सामरिमे क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वेद आ सामवेदक अध्ययनक केन्द्र छल । मधुबनी जिलाक 'भट्सिम्मरि'मे भट् पद्धतिक मीमांसा तथा 'मऊबेहट'मे यजुर्वेदक माध्यन्दिनीशाखाक केन्द्र छल ।

मधुबनी जिलाक लोहना गाम संस्कृत विद्याक केन्द्र छल । विक्रमशिला विश्वविद्यालयक पतनोपरान्त लोहना विश्वविद्यालयक रूप धारण कयलक । एहि

ठाम दूर-दूरसँ शिक्षार्थी-लोकनि आबि विद्योपार्जन करैत छलाह । खंडवालावंशीय शासकक समय (16म शताब्दी सँ 19म शताब्दी)मे लोहना विश्वविद्यालयक विकास चरमोत्कर्ष पर छल ।

1860 ई.मे महाराजा महेश्वर सिंहक निधनक पश्चात् दुनू कुमार (लक्ष्मीश्वर सिंह आओर रामेश्वर सिंह)क नेना होयबाक कारणेँ मिथिलाक शासन अंग्रेज (कोर्ट्स ऑफ वार्ड्स) क अधीन भऽ गेल । अंग्रेज लोकनि मिथिलाक सामाजिक जड़ताकेँ दूर करबाक हेतु एहिठाम अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार आवश्यक बुझलनि । नावालिग कुमार लोकनिक शिक्षाक लेल कोर्ट्स ऑफ वार्ड्स द्वारा दरभंगामे एकटा एंग्लो-भर्नाकुलर स्कूल 1861 ई.मे खोलल गेल जे किछु वर्षक बाद 'राज स्कूल'क रूपमे परिणत भेल । बादमे दुनू कुमारकेँ मुजफ्फरपुर आओर काशीमे राखि अंग्रेजी शिक्षा देल गेल । कुमार लोकनिक अंग्रेजी शिक्षासँ प्रभावित भऽ 1888 ई.मे विन्ध्यनाथ झा अंग्रेजी शिक्षा सँ बी.ए. कयलनि आओर गंगानाथ झा उच्चतम शिक्षा प्राप्त कयलनि । 1879 ई.मे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह दरभंगाक गद्दी पर बैसलाह । ओकर बाद दरभंगा राज स्कूलक स्तरोन्नयन, नौकरीक हेतु प्रतियोगिता मूलक परीक्षाक आयोजन, सिरिस्ताक भाषा मैथिलीसँ हिन्दी आओर हिन्दीमे विज्ञान सहित विभिन्न विषयक लेखक हेतु पारितोषिकक घोषणा कयल गेल । ओहि अवधिमे मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसारक लेल भर्नाकुलर स्कूल सभक स्थापना भेल । आधुनिक कालमे मिथिलाक शैक्षणिक परम्परामे योगदान देनिहारमे राँटी ड्योढ़ी (मधुबनी)क बाबू चन्द्रधारी सिंह एवं मधुबनीक बाबू रामकृष्ण पूर्वेक नाम उल्लेखनीय अछि । दरभंगाक चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय आ मधुबनीक रामकृष्ण कॉलेज एहि दुनू विभूतिक क्रमशः देन थिक । एहि दुनू महाविद्यालयक स्थापना मिथिलांचलक मेधावी छात्र-छात्रा लोकनिक लेल वरदान सिद्ध भेल । स्व॰ ललित नारायण मिश्रक सत्प्रयाससँ

मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना एहिठामक शैक्षणिक परम्पराकेँ समृद्ध करबामे विशेष योगदान प्रदान कयलक ।

आइ मिथिलाक घर-घरमे स्नातक, गाम-गाममे शैक्षिक-संस्था, सहस्रो प्रशासनिक पदाधिकारी, प्राध्यापक, डॉक्टर, इञ्जीनियर, वकील आओर शिक्षाक लेल समर्पित छात्र लोकनिकेँ देखि एहिठामक समृद्ध शैक्षणिक परम्पराक अन्दाज लगाओल जा सकैछ । तथापि बाह्य रूपेँ मिथिलाञ्चलक कुल साक्षरता दर कोनहु सभ्य समाजक तुलनामे भनहि समृद्ध बुझि पड़य मुदा एखनहु धरि प्रयोजन अछि शिक्षाकेँ जन-जन धरि पहुँचयबाक, सुदूर गामक दलित वर्गक नेना-भुटका तथा ललना लोकनिकेँ शिक्षित करबाक । तखनहि हमरा लोकनि अपन गौरवशाली परम्पराक रक्षा कऽ सकब जतय एकटा घसबाह पर्यन्त संस्कृतक निष्णात होइत छलाह ।

◆◆◆

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वैदिक-युगमे मिथिलामे शिक्षाक की व्यवस्था छल ?
2. विश्वक प्रथम दार्शनिक सम्मेलन कतय भेल आओर शास्त्रार्थमे के विजयी भेलाह ?
3. मिथिलामे कोन चारि-दर्शनक जन्म भेल ?चारूक जन्मदाताक नाम लिखू ।
4. यूनानी राजदूत मेगास्थनीज कोन समयमे भारत आयल छलाह आओर मिथिलाक शिक्षा आओर दर्शनक विषयमे हुनकर की सोच छलनि ?

5. बौद्ध-धर्मक मतकेँ खंडित कऽ मिथिलामे सनातन धर्मकेँ पुनर्स्थापित करबामे किनकर योगदान रहलनि ?

6. मिथिलामे 'नव्य-न्याय' पद्धतिक जन्मदाता के छलाह ?

7. मिथिलाक विद्यापीठक आचार्य लोकनिक प्रमुख उपाधि कोन-कोन छल ?

8. मिथिलाक कोन-कोन गामक नामकरण ओहिठामक प्रचलित शास्त्रक शिक्षाक आधार पर भेल अछि ।

9. विक्रमशिला विश्वविद्यालयक पतनोपरान्त मिथिलाक कोन स्थान विश्वविद्यालयक रूप धारण कयलक?ओहि विषयमे लिखू ।

10. मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रारम्भ करबामे म० लक्ष्मीश्वर सिंहक योगदानक वर्णन करू

◆◆◆